ISSN : 2349-1876 (Print) / ISSN : 2454-1826 (Online)

Double Blind Peer-reviewed Refereed Research Journal

Volume-IX, Issue-III July-September 2022

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES RESEARCH

## SPECIAL ISSUE / विशेषांक

# रामधारी सिंह दिनकर

EDITOR

DR. SARITA SINHA

Assistant Professor and HOD (Hindi)

Jagat Narain Lal College

(A constituent unit of Patliputra University),

Near Moti Chowk, Khagaul, Patna (Bihar)-801105

Volume : 9 | Issue : 3 | July-September 2022 ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

# रामधारी सिंह दिनकर और राष्ट्रीय-चेतना

* डॉ. स्मिता कुमारी

* असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, एम. एम. महिला कालेज, आरा

रामधारी सिंह दिनकर ओजस्वी कवि और राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात है। इनकी रचनाएं राष्ट्र की अस्मिता के प्रति उद्वेलित करती है तथा भारतीय संस्कृति से परिचित कराता है। इनका साहित्य जनमानस में राष्ट्रीयता का अमर मंत्र फूकने में सक्षम है तथा कालजयी रचनाएं षौर्य, पराक्रम एवं स्वातंत्र्य चेतना का उद्घोश करती है। इनकी कविताओं में एक ओर ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। इन सभी अभिव्यक्तियों की चरम उत्कर्ष कुरूक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मौजूद है।

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर 1908 ई0 में बिहार के बेगूसराय में सिमरिया नामक गांव में हुआ था। इनके पिता रवि सिंह और माता मनरूप देवी थीं। इनके पिता एक साधारण कृशक थे। जब दिनकर एक वर्ष के थे तभी पिता का स्वर्गवास हो गया। आर्थिक विशमताओं के बीच दिनकर का बाल्य-जीवन बीता।

दिनकर जी ने सामाजिक और आर्थिक असमानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की। इनकी प्रमुख रचनाओं में रश्मिरथी, हुंकार, कुरूक्षेत्र, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है। इनकी अधिकतर रचनाएं वीर रस से ओतप्रोत है। इन्हें वर्ष 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। इन्हें अपने क्षेत्रजीवन में इतिहास, राजनीति शास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विशयों को पसंद था। बाद में इनका झुकाव साहित्य की ओर हुआ। वे अल्लामा इकबाल और रवींद्रनाथ टैगोर को अपना प्रेरणा श्रोत मानते थे। इन्होंने टैगोर की रचनाओं का बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद किया। दिनकर जी का पहला काव्यसंग्रह 'विजय संदेह' वर्ष 1928 में प्रकाषित हुआ। पद्मभूशण से सम्मानित दिनकर राज्यसभा के सदस्य भी रहे। इन्हें 1972 ई0 में ज्ञानपीठ सम्मान भी दिया गया।

जनमेजय का कहना है कि भूशण के बाद दिनकर ही एकमात्र ऐसे कवि रहें, जिन्होंने वीर रस का खूब इस्तेमाल किया। वह एक ऐसा दौर था, जब लोगों के भीतर राष्ट्रभक्ति की भावना को अपने कविता के माध्यम से आगे बढ़ाया। जनकवि होने के कारण इन्हें राष्ट्रकवि कहा गया।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चर्तुवेदी के साथ-साथ रामधारी सिंह दिनकर का नाम सर्वोपरी है। इनकी प्रमुख रचनाएं रेणुका, हुंकार, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी बापु, परशुराम की प्रतीक्षा इत्यादि में राष्ट्रीय चेतना के गुण विद्यमान है। देश की आजादी की लड़ाई में भी दिनकर ने अपना योगदान दिया। वह बापू के बड़े मुरीद थे। हिन्दी साहित्य के बड़े नाम दिनकर उर्दू, संस्कृत, मैथली और अंग्रेजी भाशा के भी जानकर थे। 1999 ई0 में उनके नाम से भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया था। दिल्ली के रामलीला मैदान में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने हजारों लोगों के समक्ष दिनकर की पंक्ति सिंहासन खाली करो कि जनता आती है का उद्घोश करके तत्कालीन सरकार के खिलाफ विद्रोह का षंखनाद किया था। दिनकर जी ने गुलाम भारत और आजाद भारत दोनों में अपनी कविताओं के जरिये क्रांतिकारी विचारों को विस्तार दिया।[1]

दिनकर जी के यहां राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है। हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर